पुराणों की प्रयोजनीयता

(पारम्परिक एवं जैन पुराणों के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ. अर्चना रानी दुबे*

'पुराण' शब्द का अर्थ 'पुराना आख्यान' है–'पुराणमाख्यानम्'[1]। पुराणों में प्राचीन आख्यानों की ही विशेषता रही है। 'पुरातनं पुराणं स्यात्....' ऐसा आदिपुराण में भी कहा गया है।[2] ऋग्वेद में कई स्थलों पर 'पुराण' शब्द का उपयोग हुआ है।[3] यहाँ पर यह शब्द प्राचीनता अथवा प्राचीन गाथा का ही द्योतक है। निरुक्तकार 'यास्क' के अनुसार जो प्राचीन होकर भी नया होता है, उसे पुराण कहा गया है।[4] 'पुरा नवं भवति'–अर्थात् प्राचीन तत्त्व का अभिनव रीति से प्रस्तुतीकरण। विश्व का विशुद्धं व समग्र इतिहास यदि हमें कहीं दृष्टिगोचर होता है तो वह पुराणों में ही उपलब्ध होता है। वेद–उपनिषद् व आरण्यक–धर्मसूत्र अदि ग्रन्थ जिस अर्थ को सूत्र रूप से या प्रतीक रूप से प्रस्तुत करते हैं, उन्हीं दुरुह विषयों को पुराण सरल से सरल भाषा में उदाहरण, प्रत्युदाहरण आदि के माध्यम से पाठकों के समक्ष उपस्थित करते हैं। 'इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत्'–इस प्रसिद्ध उक्ति के अनुसार वेदों का पूरण करने वाले 'पुराण' हैं। पुराण वेदों के मत और सामग्री का समर्थन करते हैं और उसे परिवर्धित करके बोधगम्य बनाते हैं।

पारम्परिक संस्कृत पुराणों के समानान्तर जैन–परम्परा में भी पुराणों की अविच्छिन्न धारा उपलब्ध होती है।

जैन–पुराण प्राचीन भारतीय संस्कृति का व्यापक चित्र प्रस्तुत करते हैं। इन पुराणों का प्रणयन यद्यपि गुप्तोत्तरकाल में हुआ है, किन्तु विषय–वस्तु एवं विचारधारा की दृष्टि से ये चिरपुरातन कहे या जा सकते हैं। जैन विद्या के ये विश्वकोष हैं।

जैन पुराणों का उद्भव आदि तीर्थंकर ऋषभदेव से माना जाता है, जो गुरु परम्परा द्वारा विकसित हुआ। जैन पुराणों के उद्भव में तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं धार्मिक परिस्थितियों की भूमिका प्रमुख रही है। जैन मान्यतानुसार 63 तिरसठ शलाकापुरुष होते हैं–इन तिरसठ शलाकापुरुषों के जीवन चरित को आधार बनाकर अनेक पुराणों एवं चरित्र ग्रन्थों का निर्माण किया गया है।

---

[1]संस्कृत साहित्य का इतिहास–पृष्ठ 44 (आचार्य बलदेव उपाध्याय)

[2]आदिपुराण 1/21

[3]ऋग्वेद 3/54/9, 3/58/6, 10/130/6

[4]'पुरां नवं भवति'– निरुक्त 3/19